सीकर का इतिहास

उमेश कुमार दिशोदिया
सिधानियां विश्वविद्यालय, बेरी-पचेरी
(झुंझनू-राजस्थान)

शेखावाटी सम्भाग का सीकर महत्वपूर्ण ठिकाना था। राव शेखा से नवीं पुश्त में होने वाले राव दौलतसिंह (रायसलजी के पुत्र तिरमलजी के वंशधर) न सन् १६६७ ई में सीकर को अपनी राजधानी बनाकर गढ़ की नींव डाली थी।[१] जिस स्थान पर आज सीकर बसा हुआ है, वह स्थान शेखा जी से पूर्व भी अस्तित्व में था। यह स्थान वीरभान का बास ओर सीकर दोनों नामों से प्रसिद्व था।[२] सीकर उस समय कासली के चन्देलों के राज्य में था। कासलीं आस पास का यह भू—भाग बागड़ प्रदेश का ही दक्षिण —पश्चिम का भाग था ओर चन्देलों का परगना कहलाता था।[३] और उस समय तक इसका नाम शेखावाटी नहीं पड़ा था। गुजरात के प्रथम आक्रमण में रायसलजी अकबर के समीप आए तो उसी प्रकार गुजरात के दूसरे हमले में तिरमलजी ने अपनी तलवार के हाथ दिखाये जिससे अकबर बादशाह ने प्रसन्न होकर उनको पिता की मौजूदगी में ही राव की पदवी और कासली जागीर में दी, इसलिए उनके वशंज रावजी कहलाते हैं। तिरमजली के पश्चात् उनके पुत्र गंगाराम कासली की गद्दी पर आसीन हुए।[४] गंगाराम के पुत्र श्यामराम हुए और श्यामराम के जसवन्तसिंह। ये वीर पुरुष थे। इन्होंने कुछ ग्रामों पर अधिकार किया और दुजोद को राजधानी बनाकर वहीं रहने लगे। वे खण्डेला नरेश को तंग किया करते थे। इस कारण खण्डेला के राजा बहादुर सिंह ने उन्हें मरवा दिया और इस बैर को मिटाने के लिए उनके पुत्र दौलत सिंह को वीरभान का बास नामक गांव दिया।[५] धीरे—धीरे दौलतसिंह २५ ग्रामों के स्वामी हो गये। उन्होंने वीरभान का बास के स्थान पर सन् १६८७ ई. में सीकर नगर बसाया, गढ़ बनवाया और एक देवालय भी बनवाया।[६] दौलत सिंह के कोई सन्तान नहीं थी। एक किंवदन्ती के अनुसार उनके छोटे भाई फतेहसिंह की सेवा से प्रसन्न होकर दुजोद में आये हुए एक सन्त शिवपुरी जी ने दौलतसिंह के एक पुत्र होने का आशीर्वाद दिया। समय पाकर समय पाकर दौलत सिंह के घर पुत्र उत्पन्न हुआ और उस सन्त के सम्मान में उसका नाम शिव सिंह रखा गया। सन् १७२१ ई. में दौलतसिंह की मृत्यु होने पर शिव सिंह सीकर के स्वामी हुए। इन्हें पिता से २५ गांव उत्तराधिकार में मिले थे।[७]

इनकी सहायता पाकर सन् १७२५ ई. में १५० सवारों के साथ शार्दूल सिंह ने अपने वैर—शोधन के लिए फतेहपुर पर आक्रमण किया। नवाब सरदार खां को फतेहपुर का नवाब बनाया गया। फिर धिरे—धिरे शेखावतों की विजय पताका फहराने लगी और १७३० ई. के अन्तिम दिनों में फतेहपुरवाटी पर शिवसिंह का पूर्ण अधिकार हो गया।[८] इस प्रकार शिव सिंह की मृत्यु के बाद चांद सिंह जी १७४८ ई. गद्दी पर बैठे। इन्होने जयपुर नरेश ईश्वरी सिंह की सहायतार्थ अनेक युद्ध लडे। सिन्धी और बिलोचियों के सहयोग से कसयमखानियों ने फतेहपुर पर अधिकार कर लिया था। इन्होंने कायमखानियों के दांत खट्टे करके फतेहपुर पर अपना अधिपत्य स्थापित किया। इन्होंने बलारा में सन् १७५० ई. में सुदृढ़ किला बनवाया। चौरासी के चोरों को चुन—चुन कर मारा।[९] सन्

१७६३ ई. में बीदावतों के बखेड़े को दबाने के लिए डाली गई गनेडी की छावनी में चांद सिंह अचानक परलोक सिधार गये। इनके पीछे इनके पुत्र देवी सिंह सीकर की गद्दी पर सन् १७६३ ई. में अधिष्ठित हुये।[१०] इन्होंने जयपुर नरेश प्रतापसिंह के पक्ष में खार युद्ध में बड़ी वीरता प्रदर्शित की। सन् १७८४ ई. में इन्होंने देवगढ़ का किला बनवाया। कासली के महाबली पूर्णमल को पराजित करके कासली पर अपना अधिकार स्थापित किया।[११] ये गुणियों एवं कवियों का सम्मान करने वाले थे तथा स्वयं भी कविता किया करते थे। कवीन्द्र, कृपाराम खिडिया आदि इनके विशेष दरबारी कवि थे। इनके दरबार में ४५ चारण कवि होने की बात प्रसिद्ध है। खोह की भीमली पहाड़ी पर इन्होंने सुदृढ़ दुर्ग बनवाकर अपने उपास्य देव के नाम पर रघुनाथगढ़ नगर आबाद किया।[१२] इन्होंने रामगढ़ सेठान को सन् १७९१ ई. में बसाया तथा अपने समय में सीकर राज्य का विस्तार कर वैभव बढाया। वि.स. १८५२, मार्ग शीर्ष कृष्णा १४ सन् १७९५ को वे परलोक सिधारे।

देवीसिंह के पश्चात् राव राजा लक्ष्मणसिंह सन् १७९५ ई. में सीकर की गद्दी पर बैठे। ये भी पिता की भांति कुशल शासक थे। प्रारम्भ में इन्हें भी खण्डेला, बलारा आदि ठिकानेदारों द्वारा विरोध का सामना करना पड़ा और जयपुर से नन्दराम हल्दिया के नेतृत्व में सेना भी बुला ली गई परन्तु बडी चतुरता से राव राजा ने इस संकट को तीन लाख रूपये देकर टाल दिया और जयपुर—जोधपुर के बीच संर्घष में साथ दिया।[१३] इन्होंने सन् १८०५ ई. में सीकर से २५ किलोमीटर की दूरी पर बेडगांव की पहाडी पर लक्ष्मणगढ़ बसाकर उसके दो वर्ष बाद नगर आबाद करवाया।[१४] इन्होंने अपने बाहुबल से बीदावतों पर आधिपत्य स्थापित किया। खण्डेले पर सन् १८१२ ई. में अधिकार किया और जयपुर राज्य से पट्टा प्राप्त किया और खण्डेले का एक साल का अग्रिम राजस्व जयपुर में जमा देकर ५७ हजार रूपये वार्षिक नियत करवा कर ''रावराजा'' की उपाधि से जयपुर दरबार द्वारा विभूषित हुये। इस समय अंग्रेजी शासन विस्तार पर था। सन् १८०३ ई. में मराठा शक्ति को विजित कर बादशाह आलम को पेन्शन देकर तथा खेतड़ी राजा से मित्रता करके अंग्रेज जयपुर के साथ भी मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाने में प्रयत्नशील थे। सन् १८१८ ई. में अंग्रेजों ने जयपुर के साथ संधि करके शेखावाटी के समस्त ठिकानों पर जयपुर का अधिपत्य स्वीकार कर लिया था।[१५]

सन् १८१८ ई. के पश्चात् जयपुर नरेश जगतसिंह के बाद गद्दी के झगडों में राव राजा लक्ष्मण सिंह ने रानी भाटियानी से उत्पन्न जयसिंह का पक्ष लिया। सन् १८३४ ई. तक जयपुर का शासन व्यवस्थित नहीं था। राव राजा लक्ष्मण सिंह सन् १८१४ ई. में जयपुर दरबार को ९ लाख रूपये नजराने के बतौर देकर खण्डेला की सनद् प्राप्त की थी।[१६] अनेक बार खण्डेला नरेश ने जयपुर छुडवाने का प्रयास किया मगर सफल न हो सके। अन्त में भटियाणी के कहने पर खण्डेला वापिस किया। उस समय राव राजा लक्ष्मण सिंह को १५०० गांवों और कस्बों से ८ लाख रूपये की वार्षिक आय होती थी।[१७] उन्होंने धोंकर, बराल आदि गांवों को छोडकर खण्डेला वापिस किया। सन् १८१४ ई. में जयपुर सेना सहित झुंझुनूवाटी पर हमला किया। खेतडी ठिकाने पर भी राव राजा लक्ष्मण सिंह ने आक्रमण करने का विचार किया परन्तु अन्य सरदारों के समझाने से यह विचार त्याग दिया और खेतडी से भविष्य में मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित कर लिये। राव राजा लक्ष्मण सिंह ने इस प्रकार सीकर ठिकाने की वार्षिक आमदनी में वृद्धि की तथा विरोधियो का दमन करके शक्तिशाली राज्य व्यवस्था स्थापित करने में सफल रहे।[१८] इनका स्वर्गवास सन् १८३३ ई. में हुआ था।

राव राजा राम प्रताप सिंह सन् १८३३ ई. में पांच वर्ष की अवस्था में सीकर की गद्दी पर बैठे।[१९] इस समय अंग्रेज शासन भारत में अपने पांव जमा रहा था। जयपुर नरेश सवाई रामसिंह बालक ही थे। शेखावाटी में इस समय चारों और घोर अराजकता और अव्यवस्था फैली हुई थी। डूंगजी व जवाहर जी के डाकों से जनता परेशान थी। ऐसे समय में रावराजा ने अंग्रेज अफसर कर्नल सदरलैंड से दोस्ती कायम कर जयपुर रैजिडैंसी की सहायता से सींगरावट का किला फतह किया। पाटोदा और बठोठ जो डूंगजी और जवाहर जी के आधीन थे छीन लिया और उन्हे बीकानेर की ओर खदेड दिया।[२०] सन् १८५५ ई. में वे पुन: आकर सीकर में रहने लगे। नसीराबाद की लूट की रकम बावन हजार रूपये (डूंगजी और जवाहर जी को) सीकर राव राजा को अदा करनी पडी। इस संकटकाल में दूजोद के सरदारों ने राव राजा रामप्रताप सिंह की बडी मदद की। रावराजा रामप्रतापसिंह ने अपने दोस्त कर्नल सदरलैण्ड की सहायता से सीकर ठिकाने में अनेक प्रशासनिक सुधार किये।[२१] सन् १८५० ई. में इनका स्वर्गवास हो गया। आपकी इच्छानुसार जयपुर दरबार ने आपके वैमातृक भाई भैरुसिंह को न्यायोचित उत्तराधिकारी स्वीकार कर लिया। इन्होंने बीदावतों के बढते हुए प्रभाव को नियन्त्रित किया। इन्होंने सन् १८५७ ई. की क्रान्ति में अंग्रेजों की उखडती हुई सत्ता को पुन: स्थापित करने में जयपुर नरेश का साथ दिया।[२२]

१८६१ ई. में राव राजा ने हरिद्वार की यात्रा की और वहां पर सदाव्रत चालू किया जो अब तक जारी है। १८६५ ई. में आपका स्वर्गवास हो गया। आपके नि:सन्तान होने के कारण शिवसिंह जी के वंशज ठिकाना दीपपुरा के माधवसिंह १८६६ ई. को ६ वर्ष की उम्र में गद्दी पर बैठे। जयपुर नरेश सवाई रामसिंह ने १८६८ ई. में जयपुर स्थित सीकर के डेरे में आपको बुलाकर मातमी का दस्तूर किया।[२३] सन् १८६८ ई. के भयंकर अकाल में कामदार मुकुन्द सिंह की सहायता से उत्तम प्रबन्ध किया और ठिकाने में जनता को राहत पहूँचाई।[२४] सन् १८७१ ई. में लार्ड मेयो ने दरबार किया उसमें इनको खिल्लत का सम्मान मिला। सन् १८७६ ई. में महारानी विक्टोरिया ने भारत साम्राज्ञी की पदवी धारण की। उसके उपलक्ष्य में लार्ड लिटन द्वारा किये गये दिल्ली दरबार में जयपुर नरेश के साथ राव राजा भी सम्मिलित हुये।[२५] इसी वर्ष जयपुर नरेश सवाई रामसिंह ने आपको पचरंगे झण्डे के साथ हाथी और सिरोपाव का सम्मान दिया।[२६] सन् १८८४ ई. में ड्यूक की यात्रा पर ये जयपुर पहुंचे और वहां सवाई माधव सिंह से मुलाकात की। इनके प्रयत्नों से जकात और राहदारी के मामले में खेतडी और सीकर के अधिकार पूर्ववत रखे गये।[२७] सन् १८८७ ई. में जयपुर नरेश ने जुबली दरबार कर उन्हे बहादुर की पदवी प्रदान की । सन् १८९९ ई. में शेखावाटी में भयंकर अकाल पड़ा उस समय आपने अनेक इमारतें बनवाकर लोगों को मजदूरी दी और राहत पहुंचाई। अनेक स्थानों पर कोठियाँ बनवाई। इसी समय आपने जयपुर नरेश के साथ विलायत की यात्रा की। १ जनवरी १९२२ को नये वर्ष के उपलक्ष्य में ब्रिटिश सरकार ने आपको के.सी.आई.ई. की उपाधि प्रदान की।[२८] सन् १९२२ ई. में ६२ वर्ष की आयु में आपका स्वर्गवास हो गया। नि:सन्तान होने के कारण आपने अपने भाई के पुत्र श्री कल्याण सिंह को गोद लेकर उत्तराधिकारी बनाया।[२९] कल्याण सिंह के शासन काल में सीकर ठिकाना राजस्थान में विलीन हो गया।

---

[1] झाबरमल शर्मा, सीकर का इतिहास, पृ० ४७

[२] पत्रिका, मरूभारती, श्रावणी अंक, सं २०१०, पृ, ५

[३] झाबरमल शर्मा, शेखावाटी के शिलालेख, वरदा (श्रावण सं,२००३) पृ, १५, १८

[४] डॉ हरफूल सिंह आर्य, शेखावाटी के ठिकानों का इतिहास एवं योगदान, पृ. ५९
[५] बख्शी झूंथालाल, माधव वंश प्रकाश (हस्तलिखित), पृ. १०८
[६] पं झाबर मल्ल शर्मा, सीकर का इतिहास, पृ. ४८—४९
[७] देवीसिंह मण्डावा, शार्दूलसिंह शेखावत, पृ. ११५—११६
[८] दस्तूर कौमवार, जिल्द २९, राजस्थान अभिलेखागार, बीकानेर, पृ. ६८५
[९] भूरसिंह, विविध संग्रह (शेखावाटी का इतिहास हस्तलिखित), पृ. ६४
[१०] पं झाबर मल्ल शर्मा, सीकर का इतिहास, पृ. ५०
[११] कर्नल टाड, शेखावाटी का इतिहास, राजस्थान, भाग—२, पृ. ७४७
[१२] बख्शी झूंथालाल, माधववंश प्रकाश (हस्तलिखित) पृ. ११५
[१३] पंञ झाबर मल्ल शर्मा, सीकर का इतिहास, पृ. १०४
[१४] जांगीड, सीकर नरेश रावराजा श्री कल्याणसिंह जी का जीवन चरित्र, पृ. २५
[१५] हरनाथ सिंह, शेखावत्स एण्ड देअर लेण्डस, पृ. ७१
[१६] डॉ वी. के. वशिष्ठ, राजपूतान एजेन्सी (१८३२—५८) पृ. १५१
[१७] पं झाबर मल्ल शर्मा, सीकर का इतिहास, पृ. ११६
[१८] हरनाथ सिंह, शेखावत्स एण्ड देअर लेण्डस, पृ. ७२
[१९] पं झाबर मल्ल शर्मा, सीकर का इतिहास, पृ. १२०
[२०] पं झाबर मल्ल शर्मा, सीकर का इतिहास, पृ. १२०—१२१
[२१] हरनाथ सिंह, शेखावत्स एण्ड देअर लेण्डस, पृ. ७५
[२२] पं झाबर मल्ल शर्मा, सीकर का इतिहास, पृ. १३०
[२३] दस्तूर कौमवार, भाग—२९, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर
[२४] शिवदयाल जांगिड, सीकर नरेश राव राजा श्री कल्याण सिंह का जीवन चरित्र पृ. २७
[२५] पंञ झाबर मल्ल शर्मा, सीकर का इतिहास पृ. १३८
[२६] हरनाथ सिंह, शेखावत एण्ड देअर लेण्डस पृ. ७७
[२७] विल्स रिपोर्ट, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर, पृ. १२२
[२८] पंञ झाबर मल्ल शर्मा, सीकर का इतिहास, पृ. १४७
[२९] दस्तूर कौमवार, भाग २९, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर।